दिनांक - 30-04-2020

कालेज का नाम - मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम - डॉ० फारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक - द्वितीय खंड कला

विषय - प्रतिष्ठा इतिहास
इकाई - चतुर्थ
पत्र - चतुर्थ
अध्याय :- चीन में पश्चिमी साम्राज्यवाद का प्रसार (1860-1899)

चीन में पश्चिमी साम्राज्यवाद का इतिहास चीन की लूट-खसोट का इतिहास है। अक्टूबर 1860 की पीकिंग संधि से पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों को चीन में काफी अधिकार मिल गये। 1860 की पीकिंग 1860 के बीच चीन के कई बन्दरगाहो तथा नगरो में उन्हे रहने की अनुमति दी गई थी। इन नगरो में पश्चिमी ढंग पर नागरिक संस्थाएं, विद्यालय पुस्तकालय, अस्पताल, जल आपूर्ति

की व्यवस्थाएँ आदि थीं। चीन के कई नगर अन्तर्राष्ट्रीय उपनिवेश बन गए थे। साथ ही चीन में ईसाई धर्म-प्रचारकों की हरकतें भी बढ़ गई थीं। 1858 की तिन्तसीन-संधि के द्वारा ईसाई धर्म और उसके प्रचारकों को चीन में अन्तर्राष्ट्रीय दर्जा प्राप्त हो गया था।

1864 से 1894 तक चीन में शांति बनी रही। किंतु कभी कभी यह शांति स्थानीय विद्रोहों के कारण भंग हो जाती थी। इसमें होपेई और शेंघाई का नाइम (Nien) आन्दोलन कियाओ चाओ का मियाओ अन्दोलन तथा पश्चिमोत्तर चीनी प्रान्तों के मुस्लिम विद्रोह उल्लेखनीय है। विदेशियों को इन विद्रोह से बड़ा प्रोत्साहन मिलता था। वे तो चाहते थे कि चीन अशान्त रहे और इसका लाभ उन्हें मिलता रहे।

नानकिंग और पीकिंग की संधियों ने बलपूर्वक चीन

चीन का द्वारा विदेशियों के लिए खोल दिया। १८६० से १८९८ तक अविच्छिन्न रूप से उनका प्रभाव बढ़ता गया। इसी समय चीन में पश्चिमी साम्राज्यवाद का प्रसार हुआ। एक चीनी इतिहासकार मा चीन चुंग के शब्दों में मेरे विचार में इन दोनों विदेशियों के द्वारा चीन का अपमान हो रहा है। ताओ कुआंग (Tao Kuang) के शासन की समाप्ति के वर्ष से मिलकर विदेशियों ने चीन को अनेक अनुचित संधियाँ करने के लिए बाध्य किया और चीन के व्यापार पर अनेक प्रकार के नियंत्रण लगाए जिनके साथ उन लोगों ने पूर्वी देशों को भी अपनी दमन नीति का शिकार बनाया। पीकिंग में विदेशियों के दूतावास कायम हुए और वे चीन पर अपना प्रभाव कायम करने लगे। ईसाई-धर्म प्रचारकों की हरकतें भी बढ़ गई।

ईसाई धर्म प्रचारक - प्रारंभ में ईसाई धर्म प्रचारकों को चीन में यत्र-तत्र भ्रमण करने की पूर्ण स्वतंत्रता नहीं थी।

Scanned with CamScanner

1860 की पीकिंग-संधि द्वारा उन्हें चीन में भ्रमण करने की पूर्ण स्वतंत्रता नहीं थी। तथा धर्म-प्रचार करने की पूरी छुट मिल गई। उन्हें चीन में भूमि खरीदें बेचने का भी स्वतंत्रता मिल गई। फलतः ईसाई धर्म-प्रचारकों ने भूमि खरीदना, चर्च बनाना, धर्म-प्रचार करना आदि शुरू कर दिया। इन ईसाई धर्म-प्रचारको में फ्रांस के रोमन कैथोलिक धर्म-प्रचारक प्रमुख थे। ईसाई धर्म-प्रचारकों ने शीघ्र ही अपने नापाक इरादों का परिचय देना शुरू कर दिया। वे धर्म प्रचारक के साथ-साथ चीनी समाज के रीति-रिवाजों में भी दखल देने लगे। वे अपने काले कारनामों के लिए चीनी अधिकारियों के प्रति नहीं अपितु अपने देश के राजदूतों या अधिकारियों के प्रति उत्तरदायी थे। यह बात चीनी नागरिकों और अधिकारियों को काफी खलती थी।

Scanned with CamScanner

ईसाई धर्म प्रचारक चीनी जनता और सरकार के बीच मतभेद उत्पन्न करने का भी प्रयास करते थे। यदि कोई चीनी स्वेच्छा से अपने धर्म को त्याग कर ईसाई धर्म ग्रहण कर लेता था तो ईसाई धर्म प्रचारक ऐसे लोगों को उचित या अनुचित सहायता करने के लिए तैयार रहते थे। यहाँ तक कि ऐसे अपराधकर्मियों को सजा मिलती थी। तो ईसाई मिशनरी इसका विरोध करती थी। इससे चीनी सम्राट की संप्रभुता पर आँच आती थी। चीनी अदालतों के न्यायाधीशों पर भी ईसाई मिशनरियाँ अनुचित दबाव डालती थी।

ईसाई धर्म प्रचारक बड़े उद्दंड थे। वे प्राचीन चीन के धर्म, रीति-रिवाज या सामाजिक परम्पराओं की निन्दा करते थे। वे अपने ही धर्म को सर्वश्रेष्ठ बतलाते थे। जब कभी कोई चीनी ईसाई बन जाता था तो उसे अपने सभी रीति-रिवाजों को त्याग देना पड़ता था।

Scanned with CamScanner

वह न तो पितृपूजा कर सकता था और न कोई चीनी धर्म-अनुष्ठान का पालन ही कर सकता था। धर्म परिवर्तित चीनीओं को यह सब खलता था।

ईसाई धर्म प्रचारकों में औरते भी थी। इनमें अधिकतर अविवाहित युवतियाँ होती थी। अविवाहित औरतों को पुरुषो के साथ घूमते देखने पर चीनी मन ही मन कुढ़ा करते थे। वे उनके चारित्रिक या नैतिक जीवन को दोषपूर्ण मानते थे। वे सोचते थे कि इससे चीनी समाज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और यह अनैतिकता के गर्त में डूब जाएगा। ईसाई धर्म-प्रचारकों के सम्बंध में अनेक अफवाहे भी प्रचलित थी। कहा जाता था कि धर्म-प्रचारक छोटे-छोटे बच्चों को चुरा लेते है, उनकी आँखे निकाल लेते है, आदि। भले ही ये अफवाहे गलत ही हो, किंतु इनसे

चीनियों में बड़ा असंतोष था।
चीनियों का असंतोष तो अब भी बढ़ गया जब विभिन्न देशों के ईसाई धर्म प्रचारक चीन में अपना जाल फैलाने लगे। कैथोलिक चर्च के महत्वपूर्ण सम्प्रदायों में जेसुइट फ्रान्सिसकन, मिशन सोसाइटी आदि थी। 1860 के बाद प्रोटेस्टेंट पादरियों ने बड़ा उत्साह दिखलाया। वे शिक्षण संस्थाओं, अस्पतालों आदि का सहारा लेकर अपना धर्म प्रचार करने लगे। चीन के दीन दुःखियों, असहायों तथा अपाहिजों के कल्याणार्थ अनेक काम शुरू किए गए।
फलतः अनेक चीनी ईसाई धर्म-प्रचारक चीनी धर्म में दीक्षित होने लगे। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक आठ लाख चीनी ईसाई बन गए।
तिन्तसीन घटना- ईसाई धर्म-प्रचारक चीन की जनता और सरकार दोनों की आँखों के काँटे बन गए।